सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का तृतीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम मासावतरण की दृष्टि से डॉ. शैलेश कुमार तिवारी द्वारा रचित 'वसन्तगीति एवं होलागीति की प्रस्तुति' अत्यन्त मनोहारिणी है। इसके पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित ''उत्साह और उमंग का पर्व होली'' शीर्षक लेख में होलिकोत्सव की परम्परा के विषय में ऐतिहासिक संदर्भों का रोचक प्रस्तुतिकरण किया गया है। डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'द्यावापृथिवी : स्वरूपविमर्श-2' में पूर्व क्रम को आगे बढ़ाते हुए वेद के वैज्ञानिक पक्ष को आधार बना कर द्युलोक एवं पृथ्वीलोक के उत्पत्ति के विषय में वैदिक मतों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। आनन्द शर्मा द्वारा लिखित ''ब्राह्मी लिपि : उद्भव एवं विकास'' लेख में ब्राह्मी लिपि के उत्पत्ति विषयक ऐतिहासिक सन्दर्भों को दर्शाया गया है। तत्पश्चात् शोधछात्रा शिवानी द्वारा लिखित ''अलंकारमुक्तावली में उपमालक्षण-एक विमर्श'' लेख में उपमा अलंकार के संदर्भ में आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के अभिमत का व्यापक विवेचन किया गया है। इसी क्रम में नवीन जोशी द्वारा लिखित 'भाषाशास्त्र का उद्भव एवं विकास' लेख में भाषा के स्वरूपगत विकास के संदर्भ में हुए वैश्विक प्रयत्नों की व्यापक जानकारी प्रदान की गयी है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावनाशतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा